Government Degree College, Madhuban,
Pakridayal, East-Champaran,
(B.R.A.B.U. Muzaffarpur)

Topic : Bihar : Structure and Relief/
Physiography and Structure

By →
Dr. Md. Jamshed Alam
Assistant professor
(Guest Faculty)
Deptt. : Geography

Email ID : Jamshedmit@gmail.com

स्थानीय उच्चावच के आधार पर शिवालिक पर्वतश्रेणी को पुनः तीन उप-विभागों में बाँटा जा सकता है;

(i) रामनगर दून की पहाड़ी
(ii) दूरहा घाटी या दून घाटी
(iii) सोमेश्वर श्रेणी

(i) रामनगर दून की पहाड़ी :—

शिवालिक श्रेणी का दक्षिणी भाग 'रामनगर दून' के नाम से जाना जाता है। इसकी ऊँचाई अपेक्षाकृत कम है। इसकी लम्बाई 32 कि॰मी॰ तथा चौड़ाई 8 कि॰मी॰ है। इसका सबसे ऊँचा भाग सन्तपुड़ के निकट है, जिसकी ऊँचाई 242 मीटर है।

(ii) हरहा घाटी या दून घाटी :—

हरहा घाटी रामनगर दून के उत्तर-पूर्व की ओर से शुरू होती है। इसे दून घाटी भी कहा जाता है। यह केवल 22 कि॰मी॰ लम्बी है। इसका अधिकतर भाग समुद्र-तल से 152 मीटर ऊँचा है।

(iii) सोमेश्वर श्रेणी :—

यह बिहार की सबसे उत्तरी श्रेणी है, जिसकी लम्बाई 74 कि॰मी॰ और बिहार में चौड़ाई 5 से 6 कि॰मी॰ तक है। भारत और नेपाल के बीच की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा इस

मानचित्र : बिहार : उच्चावच एवं जल-प्रवाह

1. शिवालिक पर्वत श्रेणी
2. बिहार का मैदान : अ. उत्तरी बिहार का मैदान, ब. दक्षिणी बिहार का मैदान
3. दक्षिण का संकीर्ण पठार

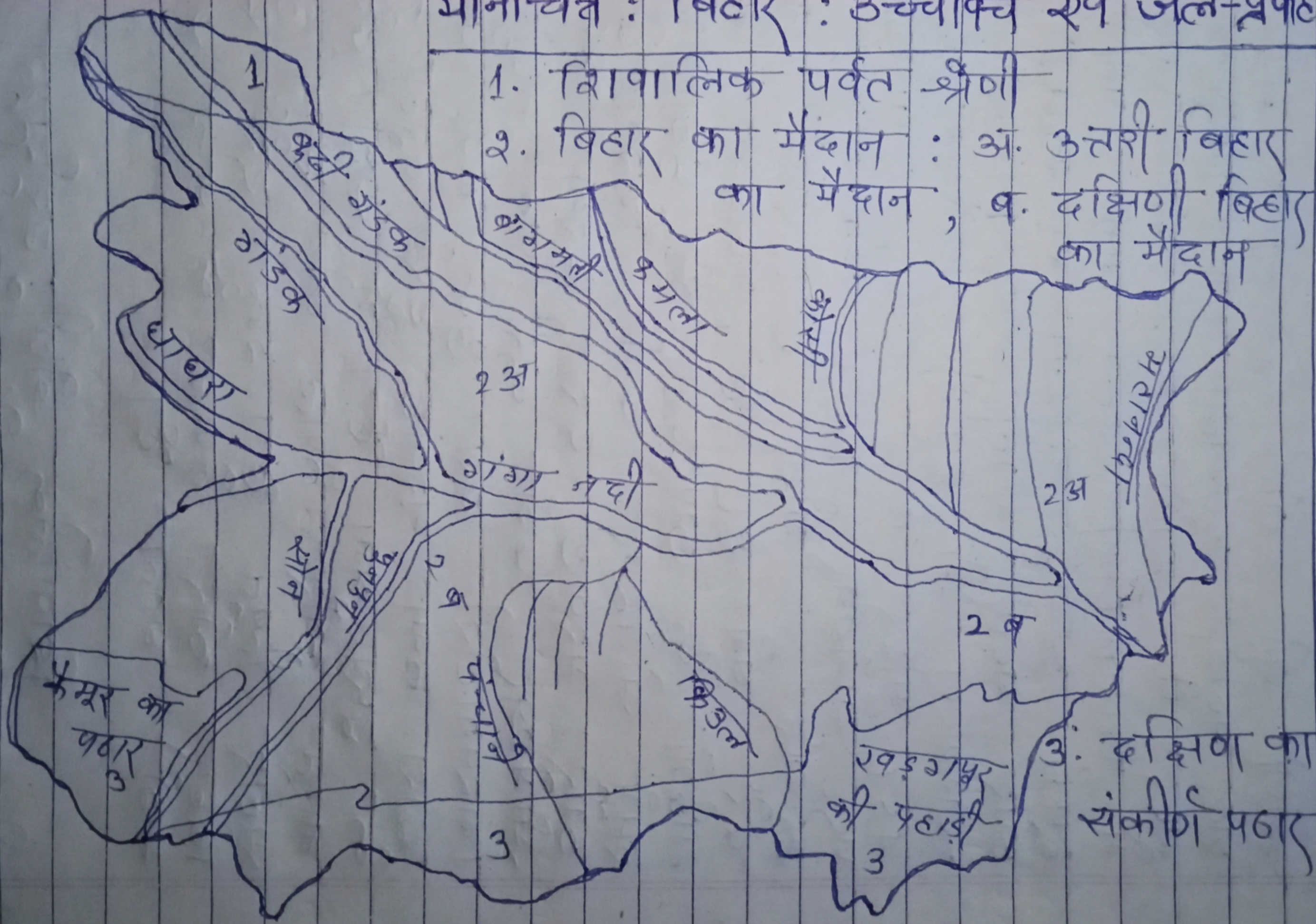

Date
Page

श्रेणी की चोटी के सहारे गुजरती है। यह पहाड़ी श्रृंखला पश्चिम में त्रिवेणी नहर के शीर्ष भाग से लेकर पूर्व में भिखनाठोरी दर्रा तक जाती है। इसकी ऊँचाई दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ती जाती है, किन्तु पश्चिमी चम्पारण में इसकी औसत ऊँचाई 457 मीटर है। इसकी सर्वोच्च चोटी पर सोमेश्वर किला स्थित है, जिसकी ऊँचाई मीटर है। इसमें अनेक दर्रे बने हुए हैं, जिनका निर्माण नदियों के अपरदन से हुआ है। इसमें सोमेश्वर दर्रा, भिखनाठोरी दर्रा और मरवाट दर्रा मुख्य है। सोमेश्वर दर्रा जूरी पानी नदी द्वारा भिखनाठोरी दर्रा कुदी नदी के द्वारा तथा मरवाट दर्रा हरहा नदी के द्वारा बना है। ये सभी दर्रे भारत और नेपाल की सीमा के सहारे स्थित है। इन्हीं दर्रों से बिहार और नेपाल के बीच सम्पर्क मार्ग बनता है।

शिवालिक श्रेणी टर्शियरी युग की परतदार चट्टानों से निर्मित है जिसमें बोल्डर-पत्थर की प्रधानता है।

इसके धरातल का निर्माण बालू, मिट्टी तथा बजरी में हुआ है। ये चट्टानें अपेक्षाकृत मुलायम हैं और अनाच्छादन की क्रिया से अधिक प्रभावित हुई है। इसके फलस्वरूप यह क्षेत्र काफी ऊबड़-खाबड़ हो गया है और सारा क्षेत्र घाटियों और कटकों में परिणत हो गया है।

Next Class:

बिहार का मैदान : उत्तरी बिहार का मैदान

Md. Jamshed Alam